ISSN: 0973-0583

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 लालमिण प्रजापति

सहायक प्राध्यापक, गॉधी स्मारक पी0जी0 कॉलेज, समोधपुर, जौनपुर, उ0 प्र0

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन हैं। इस अध्ययन में उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में जौनपुर जनपद के शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं के जनसंख्या माना गया है। माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया है तत्पश्चात् उसमें अध्ययनरत् 100 छात्र एवं 100 छात्राओं अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में के0 एस0 मिश्र द्वारा निर्मित 'पारिवारिक वातावरण अनुसूची' एवं विद्यार्थियों के कक्षा 10 की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में रखा गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विधि (एनोवा) एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण पर प्रभाव है अर्थात् उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एक-दूसरे से भिन्न है।

शब्द कुँजी: माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, पारिवारिक वातावरण

प्रस्तावना:

परिवार एक पवित्र एवं उपयोगी संस्था है जिसमें मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार सहयोग, सहायता और पारस्परिकता का भाव रहता है। यह भाव वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य आदि- जंगली स्थिति से उन्नति कर आज सभ्य स्थिति में पहुँचा है। सहयोग की भावना ही मनुष्य जाति की उन्नति का मूल कारण रही है। एकता, सामाजिकता, मैत्री आदि की सहयोगमूलक शक्ति ने आज मानव सभ्यता को उच्च स्तर पर पहुँचा दिया है। अभिभावकों के व्यक्तिगत आचरण के साथ परिवार का वातावरण भी बच्चों और सदस्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता हैं। जिन घरों में दिन-रात लड़ाई-झगड़ा तथा आपा-धापी होती रहती है, उस परिवार के बच्चों और अन्य सदस्य परस्पर सहयोग का मूल्य नहीं समझ सकते है। उन बच्चों में स्वार्थ और कलह की प्रमुखयता हो जाती है।

परिवार के माध्ययम से मुनष्य आत्म-कल्याण की ओर भी अग्रसर होगा तब उनमें सामाजिकता, नागरिकता और सबसे बड़ी बात विश्व मानवता का कल्याणकारी भाव जागेगी। वह अपने जैसे अन्य मनुष्यों के लिए त्याग, सहानुभूति सौहार्द एवं आत्मीयता का अभ्यस्त हो सकेगा। मनुष्य की संकीर्णता दूर होकर उसकी आत्मा का व्यापक विकास हो, यही आत्म-कल्याण का राजमार्ग है, मनुष्य दूसरे का दु:ख-दर्द समझकर उसके साथ सहानुभूति रख सके, उसकी सेवा-सुश्रूषा तथा सहायता करने को तत्पर रहे, यही आत्म-उन्नति के लक्षण हैं।

मनुष्य का सर्वांगीण विकास पारिवारिक जीवन से ही सम्भव है। परिवार व्यक्ति का एक ऐसा आश्रय स्थल है जहाँ वह अपनी समस्त मनोभावनाओं एवं इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए पूर्णत: स्वतन्त्र होता है। परिवार के बिना सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। परिवार के प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते

हुए सहयोगपूर्वक रहते हैं। पारिवारिक सदस्य रक्त सम्बन्धी होने के साथ ही भावनात्मक रूप से भी एक-दूसरे से आबद्ध होते हैं।

पूर्व अध्ययनों से ज्ञात होता है कि शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जैसे कि माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की कृषि विज्ञान में प्रदर्शन पर माता-पिता की शैक्षिक योग्यता, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय और घर की अवस्थिति के साथ सम्बन्धित और महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया (इगुनशोल, 2014) छात्रों की अंग्रेजी भाषा में उपलब्धि पर माता-पिता की आर्थिक स्थिति का सकारात्मक प्रभाव पाया गया (ओग विमुडिया एम0आई0 और आयश, एम0वी0 2013)। माता-पिता जो अनपढ़ है वे अपने बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों का पालन करने में असमर्थ है (सिंह, अमरवीर एवं सिंह जयपाल 2014)। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के घर के वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया (कक्कड़, निधि 2016)। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के घर के वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि और घर के परिवेश में महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया (देशवाल, वाई0एस0, रेखारानी एवं अहलावत सविता 2014)। छात्रों के घर आने पर माता-पिता द्वारा उनके शैक्षिक कार्यों की देख-रेख न करने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है (ओवेता, एंथोनी ओ0 2014)। छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर परिवार के आकार और प्रकार का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है।

अध्ययन का शीर्षकः

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्यः

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य का अध्ययन किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँः

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. उच्च, माध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में जौनपुर के शहरी क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया है। माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्य परक विधि से किया गया है। तत्पश्चात् उसमें अध्ययनरत् 100 छात्र एवं 100 छात्राओं अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में के0 एस0 मिश्र द्वारा निर्मित पारिवारिक अनुसूची एवं विद्यार्थियों के कक्षा 10 वीं की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में रखा गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विधि (एनोवा) एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

H_1 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

H_{01} माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

ISSN: 0973-0583

सारणी सं0 1

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण में अन्तर को दर्शाते हुए एफ-अनुपात

स्रोत		S S	MS	F	सारणी मान
समूहों के माध्य	2	33832.92	16916.46	9.76	F. 05(2.198) =3-04
समूहों के अन्दर	198	343138.20	1733.02		
कुल	**200**	**376971.12**	**18649.48**		

*.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ-अनुपात का मान 9.76 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर df=197 पर सारणी मान 3.04 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है।

सारणी सं0 - 1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम, एवं निम्न पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात

क्र.सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	6 D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च	48	404.54	7.96	31.55	3.96	सार्थक
	मध्यम	101	372.99				
2	उच्च	48	404.54	9.13	63.64	6.97	सार्थक
	निम्न	51	340.90				
3	मध्यम	101	372.99	7.80	32.09	4.11	सार्थक
	निम्न	51	340.90				

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है की माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी- मान क्रमश: 3.96, 6.97 एवं 4.11 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट है कि उच्च पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मध्यम एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जबकि मध्यम पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। सारणी से स्पष्ट हैं कि उच्च, मध्यम, निम्न पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण पर प्रभाव है अर्थात् उच्च, मध्यम, एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एक -दूसरे से भिन्न है।

निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माता-पिता द्वारा अपने बच्चे के साथ स्वच्छंदता एवं स्वतंत्रता की भावना रखनी चाहिए तथा किशोरावस्था के बालक-बालिकाओं के आत्म-प्रकटीकरण पर रोक नहीं लगना चाहिए, साथ ही साथ उनके बातों को सुनना चाहिए तथा उनके बातों को गौर करना चाहिए जिससे वे बेझिझक अपने बातों को माता-पिता के साथ कह सकें जिससे उनका व्यक्तित्व विकास एवं संवेगात्मक बुद्वि प्रभावित न हो सकें। माता-पिता को बच्चों के साथ उन सर्जनात्मक गतिविधियों को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान करना जिनसे विद्यार्थियों के आन्तरिक व्यक्तित्व का विकास सम्भव हो सके तथा उनमें सामाजिक संवेदनशीलता और मानवीय चेतना से सम्बन्धित शीलगुण में परिवर्तनकारी अभिलक्षण विकसित हो सकें।

❖❖❖

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. गुप्ता, एस0पी0 (2009). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
2. ओमन, निम्मी मारिया (2015). होम एन्वायरमेण्ट एण्ड एकेडेमिक एचिवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स एट हायर सेकेण्डरी लेवल, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ करेण्ट रिसर्च, 7 (07), पृष्ट 18745-18747
3. सिंह, अमरवीर एण्ड सिंह, जयपाल (2014). द इन्फ्लुएन्स ऑफ होम इन्वायरमेण्ट ऑन स्टूडेन्ट्स एकेडेमिक परफार्मेन्स इन सेलेक्टेड सेकेण्डरी स्कूल्स इन अएसा म्यूनिस्पिलटी, जर्नल ऑफ नोबेल एप्लाइड साइंसेंस, 15, पृष्ट 348-352
4. इला. आर0ई0, ओडोक, ए0 ओ0 एवं इला,जी0ई0 (2015), इन्फ्लुएन्स ऑफ फैमिली साइड एण्ड फैमिली टाइप इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ स्टूडेन्ट्स इन गवर्नमेन्ट इनल कैलावर म्यूनिस्पिलटी, क्रास रीवर स्टेट, नाइजीरिया, इण्टरनेशनल जर्नल ह्यूमनीटीज, सोशल साइंस एण्ड एजूकेशन, 2 (4), पृष्ट 108-114